

MR. CHAIRMAN : No one disputes your seriousness.

SHRI K.D. MALAVIYA : So far as contribution of Tatas to the TISCO is concerned, I have not got the figures here. If the honourable Members give me another notice, I will give him the exact figures. With regard to contributions of Tatas, it is a history which is obviously known to the honourable Member that this- .. (Interruptions) Will you please listen to me first ? There is no doubt that the founders of the steel plant at Jamshednagar were Tatas. It is also a fact that most of the investment made in subsequent years right up to the time was by public institutions, they have made substantial contribution to this. And about percentage of Tata's contribution, personal contribution to this is not known to me just now. I am not aware of it just now. After that...(Interruption)... there is a very sound and technologically feasible steel plant at Jamshedpur; if this plant is extended this will give us a lot of facilities which otherwise we will not get. Therefore, the Government, in their wisdom thought that...

श्री ए० जी० कुलकर्णी : इस सफाई की क्या जरूरत है ?

SHRI K.D. MALAVIYA : Will you please listen to me ? If you do not accept what I have said, don't accept. I do not ask you to accept it. But first please listen to me.. •

MR. CHAIRMAN : Mr. Kulkarni, let him finish the answer first.

SHRI CHANDRA SHEKHAR : Sir, obviously we know the history of Tatas. • The Minister is evading the reply. My question was not to know the history of Tatas. I am not interested in the history of Tatas. I know the history of Tatas. And that history is not bright. I want to know the present position of Tatas' history. If the honourable Minister can say something about the present history of Tatas, I shall be glad.

SHRI RAJNARAIN : You know the history of the Minister ?

SHRI K.D. MALAVIYA : Please listen to me first. I am referring to the present history of the Tatas' plant which is situated in Jamshedpur. I am not referring to any other history. Expansion of the steel plant economically and technologically is considered more feasible because we can expand the plant more smoothly and economically. Whether it belonged formerly to Tatas or not is not the question just |

now. Therefore, the question of expansion of the plant at Jamshednagar cannot be ruled out. It should not be ruled out in the national interest. National interest demands that this plant should be expanded. What has happened to the owner is another matter for which this is not the occasion to discuss.

*671. [Transferred to the 29th August 1974].

रक्षा सेवाओं में भर्ती

*672. श्री नथी सिंह :

श्री जगदीश जोशी :

श्री कल्पनाथ :

श्री गुणानंद ठाकुर :

श्री कमलनाथ भा :

क्या रक्षा मंत्रा यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या सरकार के रक्षा सेवाओं में जवानों की भर्ती के लिए ऊंचाई की शर्तों में ढील दिये जाने के किसी प्रस्ताव पर जैसी कि ब्रिटिश सेना में गोरखों की भर्ती के संबंध में दी गई थी, विचार कर रही है ?

ti Recruitment to Defence Services

*672. SHRI NATHI SINGH : SHRI JAGDISH JOSHI : SHRI KALPNATH : SHRI GUNANAND THAKUR: SHRI KAMALNATH JHA : Will the Minister of DEFENCE be pleased to state :

(a) whether there is any proposal under Government's consideration to relax the condition relating to height in respect of recruitment of jawans to Defence services as had been done in respect of recruitment of Gurkhas to the British Army ?]

रक्षा मन्त्री (श्री जगजीवनराम) : इस समय सशस्त्र सेनाओं में भर्ती के लिए विभिन्न जाति समूहों में ऊंचाई के 152 से०मी० से 168 से०मी० तक पहले ही विभिन्न स्टेडर्ड हैं। भर्ती कराने वाले चिकित्सा अधिकारी के विचार में जहाँ रंगरूट 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक निर्धारित ऊंचाई प्राप्त कर सकता है तो सेना के मामले में इन निर्धारित स्टेडर्ड में 2 से०मी० तक छूट दी जा सकती है। इन वर्तमान निर्धारित शर्तों में आगे और छूट देने का इस समय कोई प्रस्ताव विचारधीन नहीं है।

t [THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI JAGJIVAN RAM): At present, there are already different standards of height for

tThe question was actually asked on the floor of the House by Shri Jagdish Joshi. t[] English translation.

different ethnic groups for recruitment to the Armed Forces ranging from 152 cms to 168 cms. These prescribed standards can, in the case of the Army, be relaxed upto 2 cms. where in the opinion of the Recruiting Medical Officer the recruit is likely to come up to prescribed height by the time he attains 18 years. There is no proposal under consideration at present to further relax these existing prescribed conditions.]

श्री जगदीश जोशी : माननीय मंत्री जी क्या यह बतलाने की कृपा करेंगे कि गोरखा लोगों के कद की विशेष छूट अंग्रेजों ने दी थी इसलिए कि वह उनके लिए ईमानदारी से लड़ते रहे और आदिवासियों ने, हरिजनों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया इस लिए उन्होंने उनको छूट नहीं दी। यह उनकी कम खायी या बिना खायी जो पीड़ियां हैं वह कद में बहुत ही छोटी हैं। तो अंग्रेजों ने जान बूझकर ऐसे नियम बनाये कि वे फौज में भर्ती न हो सकें। अब चूंकि हिन्दुस्तान आजाद है, और यहां आदिवासी हैं, गोंड हैं, भील हैं, शंकर शाह को खोला है, अगर वह फौज में भर्ती होना चाहें तो उनका कद छोटा है। इसी तरह से अनेकों आदिवासी हैं जो निपुण होते हैं लड़ाई में, लेकिन वह सेना में भर्ती नहीं हो सकते . . .

श्री सभापति : आप प्रश्न करिये।

श्री जगदीश जोशी : मैं प्रश्न पर ही आ रहा हूँ कि क्या हरिजन और आदिवासियों के लिए विशेष तौर पर कद की सीमा को घटाने या उसको रिलेक्स करने का कोई विशेष नियम आप कुछ वर्षों के लिए बनायेंगे ताकि जब तक वह खा पी कर के लम्बे नहीं हो सकते तब तक फौज में भर्ती हो सकें ?

श्री विशाचरण शुक्ल : मैंने मूल उत्तर में बताया कि यह विभिन्नता अभी भी हम माने हुए हैं और जो हमने ऊंचाई अहीर, गुजर, जाट, सिख, इत्यादि के लिए रखी है उस से काफी कम हमने भील, गोंड, संथाल, गोरखा आदि के लिए रखी हुई है। मैं बता सकता हूँ कि जब अहीर, गुजर, जाट आदि के लिए 168 सेंटी मीटर तक की ऊंचाई रखी गयी है तो भील, गोंड, संथाल और आदिवासियों के लिए 157 सेंटी मीटर ही रखी गई है। इसी तरह से हाइट, वेट आदि का देखो भी उन के लिए कम है। तो यह बात नहीं है कि इसमें किसी प्रकार का सोच विचार करके नहीं रखा गया। बाकी जो माननीय सदस्य ने बातें कही हैं वह बातें तो सही हैं, लेकिन उन सब बातों का विचार करके ही यह स्टैंडर्ड रखा गया है। अभी पिछले साल एक समिति हमने बिठवाई थी आर्मी की, जिसमें वायू सेना और जल सेना के लोग नहीं थे, वह आर्मी की समिति थी जिसमें सेना के सदस्य थे, वहां इसको फिर से देखा गया था कि वर्तमान सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए और

उनके हिसाब से जो और संतुलन बिठलाना था वह बिठाया गया है।

श्री जगदीश जोशी : माननीय मंत्री जी ने कहा कि 157 से 160 सेंटीमीटर आदिवासियों के लिए है और हरिजनों का नाम उसमें नहीं है और 152 से 160 गोरखों के लिए है। तो वह गोरखों के लिए 152 इस लिए किया गया कि गोरखा बटालियन अंग्रेजों के लिए लड़ी थी किसी जमाने में और शंकर शाह की जो खोला है उसके लिए 157 है। इस अनुमोली को दूर करके क्या आप हरिजनों और आदिवासियों को एक ही श्रेणी में लायेंगे और उनका प्रतिशत सेना में कितना है ? हरिजनों और आदिवासियों का सेना में क्या प्रतिशत है ?

श्री विशाचरण शुक्ल : इस में अंग्रेजों के प्रति ईमानदार रहने या न रहने का प्रश्न नहीं है। इसमें तो केवल यह सवाल है कि किस बटालियन ग्रुप में किस की ऊंचाई कितनी रखनी है। यह सर्व विदित है गोरखों की ऊंचाई दूसरों की अपेक्षा कम होती है इस लिए उनकी ऊंचाई कम रखी गयी है। तो माननीय सदस्य इस बात के बारे में निश्चिन्न रहें।

जहां तक हरिजन भाइयों का सवाल है, जहां तक कि माहर्स हैं, उनमें जो हमारी आखिरी श्रेणी है दूसरे भारतीय नागरिक, उसमें वह सम्मिलित किये जाते हैं और उसमें जो ऊंचाई निर्धारित की गई है वह 162 सेंटीमीटर की गई है।

SHRI N. R. CHOUDHURY : Sir, we want an half-an-hour discussions on this. This is very important.

MR. CHAIRMAN : Question Hour is over.

SHRI N. R. CHOUDHURY : Sir, this is very important. Nothing comes out from his reply.

MR. CHAIRMAN : Question Hour is over.

SHORT NOTICE QUESTION AND ANSWER

(MR. DEPUTY CHAIRMAN IN THE CHAIR)

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now, let us take up the Short Notice Question. Yes, Mr. Niren Ghosh.

Expert Committee Report on Synthetic Oil Project

SHRI NIREN GHOSH : Will the Minister of STEEL AND MINES be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the Expert Committee Report, 1956 on Synthetic Oil Project has been brought to this notice only recently;